PUBLIC SCHOOL DARBHANGA

3

प्रेरक प्रसंग

स्वाभिमान

पंडित मदनमोहन मालवीयजी का नाम कौन नहीं जानता। वे हर प्राणी से प्रेम करने वाले, परोपकारी, नियमों के पक्के तथा समाज-सुधारक थे। उन्होंने अपनी निष्ठा, लगन, दृढ़-निश्चय, परिश्रम और साहस के बल पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की और 'महामना मदनमोहन मालवीय' कहलाए।

एक बार मालवीयजी के पास कोलकाता (कलकत्ता) विश्वविद्यालय के उपकुलपति का पत्र आया। पत्र पढ़कर मालवीय जी असमंजस में पड़ गए। उनके पास ही एक सज्जन बैठे थे। उन्होंने मालवीयजी से पूछा- "क्या बात है पंडितजी? इस पत्र में ऐसा क्या लिखा है जिसे पढ़कर आप चिंतित हो रहे हैं?"

मालवीयजी बोले-"कोलकाता विश्वविद्यालय के उपकुलपति मुझे डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित करना चाहते हैं और इसके लिए मेरी स्वीकृति माँग रहे हैं।"

सज्जन बोले-"यह तो हम सबके लिए बड़े गर्व की बात है।"

मालवीयजी व्यथित मन से बोले-"इसमें गर्व की बात नहीं है, बल्कि हमारे पांडित्य के लिए अपमान की बात है।" यह सुनकर सज्जन हतप्रभ रह गए।

तत्पश्चात् मालवीयजी ने उस पत्र का उत्तर लिखा-"माननीय महोदय, मैं आपके प्रस्ताव को स्वीकार करने में असमर्थ हूँ। मेरे उत्तर को अपने प्रस्ताव का अनादर मत समझिए। मैं जन्म और कर्म दोनों से ही ब्राह्मण हूँ। किसी भी ब्राह्मण के लिए पंडित से बढ़कर दूसरी कोई उपाधि नहीं होती। मैं डॉक्टर की अपेक्षा पंडित मदनमोहन मालवीय कहलाना अधिक पसंद

Scanned with CamScanner

करूँगा। आशा है, आप मेरी भावना को समझते हुए मुझे डॉक्टर बनाने की अपेक्षा 'पंडित' ही बना रहने देंगे।"

विनम्रता

डॉ० राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। वे अत्यंत सरल हृदय तथा विनम्र स्वभाव के थे। उनके विचार, व्यवहार तथा वेशभूषा में भारतीयता के दर्शन होते थे। जो भी उनसे एक बार मिल लेता, उनके व्यक्तित्व की छाप उसका मन मोह लेती थी। एक दिन डॉ० राजेंद्र प्रसाद अपने कमरे में बैठे कुछ काम कर रहे थे। तभी उनका एक पुराना कर्मचारी तुलसी वहाँ आया और मेज़ साफ़ करने लगा। उसी मेज़ पर हाथी दाँत से बना एक बहुमूल्य पेन रखा था। वह पेन डॉ० राजेंद्र प्रसाद को बहुत प्रिय था, क्योंकि वह पेन उन्हें किसी ने उपहारस्वरूप दिया था। अचानक तुलसी के हाथ से पेन गिरकर टूट गया। अपने टूटे पेन को देखकर राजेंद्र प्रसाद बहुत दु:खी हुए। आवेश में आकर उन्होंने तुलसी को डाँट दिया। तुलसी चुपचाप दूसरे कमरे में चला गया।

कुछ ही देर बाद राजेंद्र बाबू को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने तुलसी को बुलाया और प्यार से पूछा-"तुलसी काका! मैंने क्रोध में आकर आपको बहुत कठोर शब्द कहे हैं। क्या आप मुझे क्षमा कर देंगे?"

राजेंद्र बाबू की बात सुनकर तुलसी चकित रह गया। उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह राजेंद्र बाबू के चरणों में गिर पड़ा।

देखो बच्चो! देश के सर्वोच्च पद पर होने के बावजूद भी राजेंद्र प्रसाद में लेशमात्र भी घमंड न था। वे सभी से बहुत प्रेम करते थे। सरलता और सज्जनता ही उनका सबसे बड़ा धन था।

आज डॉ० राजेंद्र प्रसाद हम सबके बीच नहीं हैं। परंतु वे हमें सिखा गए हैं कि हम चाहे कितने भी ऊँचे पद पर पहुँच जाएँ, घमंड नहीं करना चाहिए।

CS Scanned with CamScanner